प्रेरणा

जिसने बच्चों में उम्मीद के बीज बोए

बाबा मायाराम

विज्ञान और गणित ऐसे विषय हैं, जिनमें बच्चे अक्सर पिछड़ जाते हैं। ऐसे में हमें अरविन्द गुप्ता से मदद मिल सकती है। पिछले चार दशकों से अरविन्द गुप्ता गरीब बच्चों के लिए कचरे से खिलौने बनाकर गणित और विज्ञान की शिक्षा देने के लिए जाने जाते हैं। वे अब तक पंद्रह सौ से ज्यादा खिलौने बना चुके हैं, उन्होंने हजारों वीडियो बनाए हैं।

इन मजेदार खिलौने से विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए 20 देशों के तीन हजार से ज्यादा स्कूलों में कार्यशालाएं कर चुके हैं। अब तक लाखों विद्यार्थी उनके बनाए खिलौनों से लाभांवित हो चुके हैं। यू ट्यूब पर उनके वीडियो सवा पांच करोड़ लोग देख चुके हैं जो एक रिकार्ड है। उनकी वेबसाइट (www&arvindgupta-toys&com) से रोज 15 हजार किताबें मुफ्त में डाउनलोड होती हैं।

अरविन्द गुप्ता ने कानपुर आईआईटी से इंजीनियरिंग से बीटेक किया है। शुरू में उन्होंने पुणे में टाटा मोटर्स में काम किया लेकिन वहां उनका मन नहीं लगा। वे अपने जिंदगी के मायने ढूंढ़ रहे थे।

उस समय चीनी कवि लाओ त्सु की कविता एक नारे की तरह प्रचलन में थी। एक चीनी कवि लाओ त्सु की कविता है, जो 70 के दशक में एक नारा बन गई थी -

लोगों के बीच जाओ और रहो,
उनसे प्यार करो और सीखो,
वे जो जानते हैं, वहां से शुरु करो
जो उनके पास है उसे ही आगे बढ़ाओ।

अरविन्द गुप्ता भी इससे बहुत प्रभावित थे। कुछ सार्थक करने की तलाश में मध्यप्रदेश में होशंगाबाद जिले के एक गांव में आ पहुंचे, जहां किशोर भारती संस्था स्कूली शिक्षा में विज्ञान शिक्षा पर काम कर रही थी। होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम से जुड़कर उन्होंने छह महीने काम किया।

यही वह मोड़ है जहां से उनकी जिंदगी की दिशा बदल गई। किशोर भारती से पास से 7 किलोमीटर दूर एक छोटा कस्बा बनखेड़ी है। वहां शुक्रवार को साप्ताहिक बाजार लगता है। सड़क के किनारे दुकानें लगती हैं। वहां से वे छोटी-मोटी सस्ती चीजें खरीदते थे और उनसे खिलौने बनाते थे और उसके पीछे के विज्ञान को बच्चों को समझाते थे।

साइकिल के पहिए में लगने वाली वाल्व ट्यूब, माचिस की तीली, कचरे में पड़ा वायर या बोतल, झाड़ू की सींक जैसे सामानों से वे खिलौने बनाते थे। उन्हें इस काम में टेल्को में ट्रक डिजाइन करने से ज्यादा मजा आया। और इससे कई गरीब बच्चों का बचपन खिलौनों से महरूम होने से भी बच गया।

वे कहते हैं कि किसी बात को समझने के लिए पहले बच्चों को अनुभव की जरूरत होती है। अनुभव में चीजों को देखना, सुनना, छूना, चखना, सूंघना आदि कुशलताएं शामिल हैं। वे हमेशा ठोका-पीटी कर-करके कुछ बनाते रहते हैं।

बच्चों में नया कुछ करने की हमेशा चाहत रहती है। वे बताते हैं कि कुछ समय के लिए वे छत्तीसगढ़ में लोहे की खदानों के बीच काम करने वाले मजदूरों के बीच गए थे। वहां लोहा पत्थर ढोने के लिए डम्पर ट्रक चलते थे। वहां के बच्चे दो माचिस की डिब्बियों की मदद से वह डम्पर ट्रक बनाकर खेल रहे थे। उसमें लीवर का काम करने के लिए तीली का इस्तेमाल किया गया था। इसे देखकर अरविन्द जी आश्चर्यचकित हुए और उन्होंने इसे अपनी खिलौनों की सूची में माचिस का डम्पर ट्रक शामिल कर लिया।

इन सब प्रयोगों पर आधारित उन्होंने वर्ष 1984 में मैचिस्टिक माडल एंड अदर साइंस एक्सपेरीमेंटस बुक लिखी। अब यह किताब 12 भाषाओं में है। इसके बाद उन्होंने 25 किताबें और लिखीं। इसके बाद वे पुणे में आयुका (द इंटर- यूनिवर्सिटी सेंटर फार एस्ट्रोनामी एंज एस्ट्रोफिजिक्स, पुणे) में बाल-विज्ञान केंद्र के को-आर्डिनेटर बने। वहां हर दिन वे नए-नए खिलौने बनाते थे, फिर उनकी वीडियो बनाते थे।

इसके अलावा, दुनिया के अच्छे बाल साहित्य और शिक्षा की किताबों का हिन्दी अनुवाद करके और उनकी पीडीएफ बनाकर अपनी वेबसाइट पर डालते हैं। हर दिन 7 से 8 घंटे यही काम करते हैं। देश के लगभग 7 राज्यों में हिन्दी बोलने वाले 40 करोड़ लोग हैं। फिर भी हिन्दी में शैक्षणिक और बाल साहित्य उतना समृद्ध नहीं है। इस काम को करने में रात दिन जुटे रहते हैं।

अरविन्द गुप्ता कहते हैं कि मेरी जिंदगी का एक ही मकसद है कि मैं न केवल देश बल्कि पूरी दुनिया के बच्चों को किताबें, वीडियो, मेरे बनाए खिलौनों को बनाना सीखने के तरीके मुफ्त में उपलब्ध कर सकूं, ताकि ज्ञान पाने के रास्ते में गरीबी या संसाधनों की कमी आड़े न आए, अभी वेबसाइट पर साढ़े हजार किताबें भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं। वे अब तक 220 किताबों का अनुवाद कर चुके हैं।

उनकी चिंता है कि हमारे देश में बल्कि दुनिया के कई देशों में गरीबी के चलते बच्चे खिलौने खरीद नहीं सकते। जब वे कचरे या बेकार सामान से अपने खिलौने खुद बनाकर खेलते हैं, तो इससे उन्हें बेहद खुशी होती है। भारत में खिलौने बनाने की एक परंपरा पुरानी रही है। परंपरागत खिलौने फेंकी हुई वस्तुओं को दुबारा इस्तेमाल करके बनते हैं, इसलिए वे सस्ते और पर्यावरण मित्र होते हैं। इस प्राचीन परंपरा के बारे में वे बुद्ध की कहानी सुनाते हैं-

एक दिन बुद्ध अपने मठ में मठवासियों के साथ बैठे बात कर रहे थे।

तभी एक भिक्षु ने नए अंगरखे के लिए इच्छा जताई।

बुद्ध ने पूछा - तुम्हारे पुराने अंगरखे का क्या हुआ?

वह बहुत फटा पुराना हो गया है। इसलिए मैं उसे अब चादर के रूप में इस्तेमाल कर रहा हूं।

बुद्ध ने फिर पूछा- पर तुम्हारी पुरानी चादर का क्या हुआ?

गुरुजी, वह चादर पुरानी हो गई थी, वह इधर-उधर से फट गई थी, इसलिए मैंने उसे फाड़कर तकिया का खोल बना लिया। भिक्षु ने कहा।

बेशक तुमने तकिया का नया खोल बना लिया, लेकिन तुम ने तकिया के पुराने खोल का क्या किया? बुद्ध ने पूछा

गुरुजी, तकिये का गिलाफ सर घिस-घिस कर फट गया था और उसमें एक बड़ा छेद हो गया था। इसलिए मैंने पायदान बना लिया।

बुद्ध हर चीज़ की गहराई से तहकीकात करते थे। उस जवाब से भी वे संतुष्ट नहीं हुए।

गुरुजी, पायेदान भी पैर रगड़ते-रगड़ते फट गया। - एकदम तार-तार हो गया। तब मैंने उसके रेशे इकट्ठे करके उनकी एक बाती बनाई। फिर उस बाती को तेल के दीये में डाल कर जलाया।

भिक्षु की बात सुन कर बुद्ध मुस्कराए। फिर उस सुपात्र को बुद्ध ने एक नया गरम अंगरखा दिया।

यह कहानी आज भी प्रासंगिक है क्योंकि उपभोक्तावादी संस्कृति इस्तेमाल करो और फेंको (यूज-एंड-थ्रो) की संस्कृति को बढ़ावा देती है। जिससे चीजों के प्रति अथाह चाह जगती है और पैसों की और जीवन के बहुमूल्य समय की बर्बादी होती है। और जीवन में सार्थक करने की बजाय चीजों को बटोरने में जिंदगियां लग जाती हैं।

अरविन्द गुप्ता अब शिक्षक हैं, इंजीनियर हैं, वैज्ञानिक हैं, खिलौने बनाते हैं और किताबों से बहुत प्रेम करते हैं। खुद पढ़ते हैं और अनुवाद करते हैं। सबको पढ़वाने के लिए उनकी वेबसाइट पर मुफ्त उपलब्ध करवाते हैं। वे बच्चों की उम्मीद हैं। बच्चों में भी उम्मीद जगाते हैं, उनमें उम्मीद के बीज बोते हैं।

स्मृति शेष: पं. ओमप्रकाश चौरसिया

अंतिम सांस तक वृन्दगान को प्रतिष्ठित करने में जुटे साधक का महाप्रयाण

विनय उपाध्याय

भोपाल में रहकर मधुकली जैसी संस्था के माध्यम से शास्त्रीय संगीत की परंपराओं को सहेजने और इसके प्रचार-प्रसार में अपने जीवन की सार्थकता तलाशने वाले संगीतकार व संतूर वादक पं. ओमप्रकाश चौरसिया का शनिवार को निधन हो गया। वे इन दिनों संगीत नाटक अकादमी द्वारा त्रिपुरा की राजधानी अगरतला में आगामी 18मार्च को होने जा रहे वृंदगान कार्यक्रम की तैयारियों में लगे हुए थे । जीवन के अंतिम समय तक संगीत के लिए समर्पित रहे ओमप्रकाशजी का इस तरह अचानक जाना इस क्षेत्र के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

पं.चौरसिया अपनी मौलिक शैली रखने वाले संतूरवादक के रूप में तो जाने ही जाते थे लेकिन इसी के साथ उनकी पहचान शास्त्रीय संगीत के अनूठे आयोजनों को लेकर भी थे। भारत भवन के अनहद केन्द्र के प्रभारी निदेशक के रूप में अकादमिक स्तर पर सांस्कृतिक गतिविधियां शुरु करने ,उसे विस्तारित करने और शास्त्रीय संगीत की विविध परंपराओं को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाने का श्रेय उन्हीं को जाता है। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से निकलकर मध्यप्रदेश को अपनी कर्मभूमि बनाने वाले ओमप्रकाशजी का संतूर के क्षेत्र में पर्दापण भी अनायास ही हुआ था। वे अपने गुरु पं.लालमणि मिश्र के सानिध्य में पहले गायन सीख रहे थे लेकिन बीमारी के कारण उनकी आवाज पर असर हुआ और उन्हें गुरु ने संतूर थमा दिया। इस तरह वे संतूर वादक बन गए लेकिन गायन की ओर भी उनका झुकाव बना रहा और वृंदगान के रूप में उन्होंने इसे बहुत ही जीवंतता के साथ जिया।

अपने गुरु पं.लालमणि मिश्र को समर्पित मधुकली संस्था की स्थापना कर उन्होंने लगभग खत्म हो चुकी शास्त्रीय संगीत की वृंदगान परंपरा को न केवल पुन: जीवित किया वरन उसे लोकप्रियता भी दिलाई। इसमें उन्होंने बगैर छंद या बिना लय वाली कविताओं को भी शामिल किया। मैं भी मधुकली संस्था के वृंदगान समूह का सदस्य रहा हूं और एक समय तो इस समूह ने देश के कई शहरों में प्रस्तुतियां दी थीं। जब पंजाब में आतंकवाद चरम पर था उस समय भी इस समूह ने जालंधर में एक हफ्ते तक प्रस्तुति दी थी।

उनकी एक पहचान यह भी है कि उन्होंने ही सबसे पहले भारत भवन में एक ही विधा से जुड़े कलाकारों के समारोह का आयोजन सारंगी मेले के रूप में करते हुए इस तरह के आयोजनों की शुरुआत की थी जो कि बाद में भारत भवन की पहचान बन गई। उस समय इस समारोह में करीब दो सौ कलाकारों ने हिस्सा लिया था। इसी तरक के कई नए प्रयोगों के लिए जाने -जाने वाले ओमप्रकाशजी ने संगीत के क्षेत्र में यह परंपरा भी शुरु की कि कलाकारों के साथ संगतकारों को भी यथोचित सम्मान मिले। वे चाहते थे कि कलाकारों और संगतकारों सभी को उनके पूरे स्वाभिमान और आदर के साथ समारोहों में आमंत्रित किया जाए। वे मानते थे कि संगत के बिना कोई भी प्रस्तुति अधूरी है। भारत भवन की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले वरिष्ठ साहित्यकार और पूर्व प्रशासनिक अधिकारी अशोक वाजपेयी को वे अपना अकादमिक गुरु मानते थे। उन्होंने संगीत की जानकारी को पुस्तकों में भी संजोया था। उनके संपादन में 'संगीत रस और परंपरा' वीणा -वाणी सहित दूरस्थ संगीत पर भी एक पुस्तक का प्रकाशन हुआ है।

अब शराफत का जमाना नहीं रहा

समीर लाल 'समीर'

लेखक कनाडा निवासी प्रख्यात ब्लॉगर हैं

वक्रोक्ति

किस्मत कुछ ऐसी रही कि जिस जमाने में हम पैदा हुए, शराफत और इमानदारी इस दुनिया से विदा हो चुके थे। ऐसा हम नहीं कह रहे हैं हमारे शहर भर के बुजुर्ग बताया करते थे। जिससे सुनो बस यही सुनते थे कि अब शराफत का जमाना नहीं रहा। विदा तो खैर तब तक गाँधी जी भी हो चुके थे मगर उनके बारे में जान लेने के लिए और बताने के लिए इतिहास की किताबें थीं और ज्ञानी लोग थे।

शराफत के विषय में किताब में जो कुछ भी दर्ज पाया या लोगों से जाना वो बड़ा कन्फ्यूज करने वाला रहा अतः कभी कोई निश्चित जवाब मिला ही नहीं। जब तक हम किसी की किसी हरकत को शराफत समझते वो उसे छोड़ने की घोषणा करता मिलता है कि बस, अब तक हम शराफत से पेश आ रहे थे तो तुमको समझ नहीं आ रहा था, अब हम बताते हैं तुमको अपनी असली औकात...।

पुलिस वाला तक शराफत और ईमानदारी की बात करता नजर आता है तो सारा पढ़ा लिखा पानी हो जाता है। उस दिन पुलिस वाला कहता मिला कि शराफत से पूछ रहा हूँ ईमानदारी से बता दो वरना तो फिर तुम जानते हो हमें उगलवाना आता है।लोग शराफत को कपड़ों की तरह उतारते पहनते दिखते हैं। कोई उसे कहीं छोड़ आता है तो कोई कहता है कि शराफत गई तेल लेने। एक सज्जन का तो तकिया कलाम ही यही मिला कि हमसे शराफत की उम्मीद मत रखना, उधार देना जानते हैं तो ब्याज वसूलना भी जानते हैं।

मंच से सुनाई दिया कि शराफत जो इस देश से आजादी के बाद 67 सालों से लुप्तप्राय हो गई थी, उसे मैं वापस लाया हूँ भाइयों और बहनों। पहली बार देश जानेगा कि शराफत क्या होती है। बाद में उसी मंच से आवाज उठी कि मितरों, वो एक चुनावी जुमला था...आप भी न, दिल से लगा बैठे हैं। बहुत भोले हैं आप लोग...छोड़िये न ये शराफत...आप भी आज के जमाने में क्या ओढ़े बैठे हैं? किसी ने बताया कि गधे जैसे भोले भाले और शरीफ जानवर की शराफत भी इस बार 2017 में इन नेताओं ने लूट ली गैंग बनाकर...दुल्लती भी काम न आई इतनी बड़ी गैंग से बच निकलने के लिए।

एक तरफ तो बुजुर्ग बता गये कि शराफत का जमाना गया तो दूसरी तरफ ऐसे ऐसे विवादास्पद दृश्य देखकर आज तक यही नहीं समझाया कि शराफत होती क्या है। ऐसे में कल को जब बच्चे पूछेंगे कि शराफत क्या होती है तो क्या जवाब देंगे? यही सब सोच कर अब तो हम भी आजकल इतना ही कहते हैं कि अब शराफत का जमाना नहीं रहा। हालांकि उम्र के इस दौर में बच्चों के लिए हम शहर के वैसे ही बुजुर्ग हैं जिनका हमने जिक्र किया था हमारे जमाने वाले।

भगवान मुझे मोबाइल बना दो!

वह प्राइमरी स्कूल की टीचर थी। सुबह उसने बच्चो का टेस्ट लिया था और उनकी कॉपियां जांचने के लिए घर ले आई थी। बच्चों की कॉपियां देखते-देखते उसके आंसू बहने लगे। उसका पति वही लेटे हुए अपना मोबाइल देख रहा था। उसने रोने का कारण पूछा। टीचर बोली, सुबह मैंने बच्चों को 'मेरी सबसे बड़ी ख्वाइश' विषय पर कुछ पंक्तियां लिखने को कहा था। एक बच्चे ने इच्छा जाहिर की है कि भगवान उसे मोबाइल बना दे। यह सुनकर पतिदेव हंसने लगे। टीचर बोली, आगे तो सुनो बच्चे ने लिखा है यदि मैं मोबाइल बन जाऊंगा, तो घर में मेरी एक खास जगह होगी और सारा परिवार मेरे इर्द-गिर्द रहेगा। जब मै बोलूंगा, तो सारे लोग मुझे ध्यान से सुनेंगे। मुझे रोका टोका नहीं जाएगा और नहीं उल्टे सवाल होंगे। जब मैं मोबाइल बनूंगा तो पापा ऑफिस से आने के बाद थके होने के बावजूद मेरे साथ बैठेंगे। मम्मी को जब तनाव होगा तो वे मुझे डाटेंगी नहीं, बल्कि मेरे साथ रहना चाहेंगी। मेरे बड़े भाई-बहनों के बीच मेरे पास रहने के लिए झगड़ा होगा। यहां तक कि जब मोबाइल बंद रहेंगा, तब भी उसकी अच्छी तरह देखभाल होगी। और हां, मोबाइल के रूप में मैं सबको ख़ुशी भी दे सकूंगा।''

यह सब सुनने के बाद पति भी थोड़ा गंभीर होते हुए बोला - 'हे भगवान! बेचारा बच्चा . उसके मां-बाप तो उस पर जरा भी ध्यान नहीं देते।'

टीचर पत्नी ने आसूं भरी आंखों से उसकी तरफ देखा और बोली - जानते हो, यह बच्चा कौन है? हमारा अपना बच्चाहमारा छोटू।

सोचिये, यह छोटू कहीं आपका बच्चा तो नहीं?

सेवानिवृत्ति पर विदाई

भोपाल। मप्र विधान सभा सचिवालय की सेवा से अधिवार्षिकी-आयु पूर्ण कर सेवानिवृत्त हुए अनुभाग अधिकारी पुरूषोत्तम गंगराड़े तथा सहायक ग्रेड-एक सरोज तिवारी को विधान सभा सभागार में समारोह पूर्वक विदाई दी गई । प्रमुख सचिव अवधेश प्रताप सिंह ने सेवानिवृत्तों को सम्मानित किया। सिंह ने सेवानिवृत्तों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की । अपर सचिव पी.एन. विश्वकर्मा द्वारा कार्यक्रम में आभार व्यक्त किया गया । कार्यक्रम में अपर सचिवद्वय वीरेन्द्र कुमार एवं सुधीर शर्मा उपस्थित थे ।